श्रीमद्भगवद्गीता – एक परीचय

आशीष सेमवाल, तृप्ति जुयाल

माया ग्रुप ऑफ कॉलेजेस, देहरादून, इंडिया

सार -

श्रीमद्भगवद्गीता में जहॉ ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी का संगम व समन्वय दिखाई देता है वहीं अन्य गीताओं में ज्ञान का, किसी में भक्ति का, किसी में कर्म का, किसी में ज्ञान–कर्म का, किसी में ज्ञान–भक्ति का प्रधान्य दिखाई पड़ता है। अतः सभी गीतायें किसी न किसी रूप मे वेदान्त की प्रतिपादक है और औपनिषदिक ज्ञान को व्यक्त करती है।

श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है। जिस प्रकार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं में उलझकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसके पष्चात् जीवन के समरांगण से पलायन करने का मन बना लेता है उसी प्रकार अर्जुन जो महाभारत का महानायक है अपने सामने आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर जीवन और क्षत्रिय धर्म से निराष हो गया है, अर्जुन की तरह ही हम सभी कभी–कभी अनिष्चिय की स्थिति में या तो हताष हो जाते हैं और या फिर अपनी समस्याओं से उद्विग्न होकर कर्तव्य विमुख हो जाते हैं। भारतवर्ष के ऋषियों ने गहन विचार के पष्चात् जिस ज्ञान को आत्मसात किया उसे उन्होंने वेदों का नाम दिया। इन्हीं वेदों का अन्तिम भाग उपनिषद कहलाता है। मानव जीवन की विषेषता मानव को प्राप्त बौद्धिक शक्ति है और उपनिषदों में निहित ज्ञान मानव की बौद्धिकता की उच्चतम् अवस्था तो है ही, अपितु बुद्धि की सीमाओं के परे मनुष्य क्या अनुभव कर सकता है उसकी एक झलक भी इसमें निहित है।

परीचय -

'गीता' का शाब्दिक अर्थ है–**'गाया हुआ अथवा कथन किया गया'।** अध्यात्म और ज्ञान सम्बन्धी छोटी रचनाओं का नाम प्रायः **'गीता'** हो गया। इनमें से कतिपय रचनाओं में आत्मा, परमात्मा के स्वरूप पर प्रकाष डाला गया है। तो किसी में वेदान्त और ब्रह्मज्ञान की चर्चा की गयी है, किसी में हठयोग आदि किसी योग विधि का विवेचन किया गया है, तो किसी भी सम्प्रदाय विषेष के विधि–विधानों का प्रतिपादन किया गया है और किसी में कर्मकाण्ड और वर्णाश्रम धर्म का विवरण ही पाया जाता है। परन्तु इन सभी गीताओं में सामान्य तथा एक तथ्य समान है कि अधिकतर प्रत्येक **'गीताकार'** ने अपना उद्देष्य अध्यात्म–पथ पर अग्रसर होकर मोक्ष प्राप्त करना ही माना गया है। उनके अनुसार यदि कोई मनुष्य इनमें उल्लिखित उपदेषानुसार आचरण

करता है, भजन, साधना, उपासना अथवा कर्मकाण्ड द्वारा आत्मोन्नति करता है तो वह निष्चय ही भव–बन्धनों से मुक्ति पाकर परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर सकेगा।

श्रीमद्भगवद्गीता –

श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य ज्ञान महाभारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सखा कुन्ती पुत्र अर्जुन को महाभारत के युद्ध में विचलित होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे थे।

धर्म ग्रन्थों के ऑकड़ों के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेष भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को आज से लगभग 7000 साल पहले सुनाई थी। इसकी खासियत यह है कि यह दिव्य ज्ञान आज के दिन में भी उतना ही प्रासंगिक और उपयोगी है। तब तक प्रासंगिक रहेगा जब तक इस धरती पर मानव जीवन का अस्तित्व रहेगा।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य ज्ञान कुरूक्षेत्र के रणभूमि में रविवार के दिन सुनाया था। उस दिन एकादषी थी। इसलिए हमारे हिन्दु धर्म में एकादषी का इतना ज्यादा महत्व है।धर्म ग्रन्थों के अनुसार गीता उपदेष भगवान श्री कृष्ण के द्वारा अर्जुन को लगभग 45 मिनट तक सुनाई गयी थी । भगवान ने यह गीता का ज्ञान कर्तव्य से भटके हुए अर्जुन को कर्तव्य सिखाने के लिए और आने वाली पीढ़ियों को धर्म ज्ञान सिखाने के लिए दिया था। ताकि धरती पर आगे आने वाली पीढ़ियॉ अर्जुन की ही तरह अपने कर्तव्य पथ से ना हटे और सदा धर्म के मार्ग पर ही चले, धर्म का साथ दें।

श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 18 अध्याय है और 18 अध्यायों में 700 श्लोक हैं।जिसमें मुख्य रूप से भक्ति और और कर्म योग मार्गों की विस्तृत व्याख्या की गयी है। यह भी बताया गया है कि इन मार्गों पर चलने से हर व्यक्ति निष्चित ही परमपद जीवन में सफलता का अधिकारी बन जाता है। यह महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। जैसा गीता के शंकर भाष्य में कहा है–

तं धर्मं भगवता यथापदिष्ट वेदव्यासः सर्वज्ञोभगवान् गीताख्यैः सप्तभिः श्लोकषतैरू पनिबन्ध।

ज्ञाज होता है कि लगभग 8वीं सदी के अन्त में शंकराचार्य (788–820) के सामने गीताका वही पाठ था जो आज हमें उपलब्ध है।

श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेष जब भगवान श्रीकृष्ण अपने सखा अर्जुन को दे रहे थे तो यह दिव्य ज्ञान अर्जुन के अलावा सिर्फ धृतराष्ट्र एवं संजय ने ही सुना था। यह बेहद आष्चर्य की बात है कि अर्जुन से पहले गीता का उपदेष भगवान सूर्यदेव को दिया गया था।

श्रीमद्भगवद्गीता की गिनती हमारे हिन्दू उपनिषदों में होती है जोकि हमारे हिन्दू धर्म ग्रन्थों में मुख्य है। जिनमें जीवन के विभिन्न पहलुओं और जीवन जीने के तरीकों के बारे में हम सबको बताया गया है। साथ

ही श्रीमद्भगवद्गीता दुनिया के सबसे बड़े महाकाव्य महाभारत के अध्याय शान्तिपर्व का एक हिस्सा है। श्रीमद्भगवद्गीता का दूसरा नाम गीता उपनिषद भी है।

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रमुख सार है कि हर मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए, ना ही उसे अपने कर्तव्य पथ से विचलित होना चाहिए, क्योंकि अन्त में जीत सदा सर्वदा सत्य एवं धर्म की ही होती है। परिवर्तन ही संसार का नियम है यही शाष्वत सत्य है। जो हमेषा कायम रहा है और आगे भी रहेगा।

श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 700 श्लोक हैं। जिसमें से भगवान श्रीकृष्ण ने 574 श्लोक अर्जुन ने 85 श्लोक धृतराष्ट्र ने 1 श्लोक तथा संजय ने 40 श्लोक कहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान दिव्य है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति की आधारषिला है। हिन्दू शास्त्रों में गीता का सर्वप्रथम स्थान है। गीता में 18 पर्व है। इसके रचयिता वेदव्यास है। गीता महाभारत के भीष्मपर्व का ही एक अंग है। लोकप्रियता में इससे बढ़कर कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है और इसकी लोकप्रियता दिनों–दिन बढ़ती ही जा रही है। गीता में अत्यन्त प्रभावषाली ढंग से धार्मिक सहिष्णुता की भावना को प्रस्तुत किया गया है जो भारतीय संस्कृति की एक विषेषता है। धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र में कौरवों और पाण्डवों के मध्य युद्ध में अर्जुन अपने स्वजनों को देखकर युद्ध से विमुख होने लगा। धर्मयुद्ध के अवसर पर शोकमग्न अर्जुन को गीता का उपदेष देते हुए श्रीकृष्ण ने कहा कि व्यक्ति को निष्काम भाव से कर्म करते हुए फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि।।

आत्मा की नित्यता बताते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि यह आत्मा अजर–अमर है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह आत्मा मरती नहीं है। जिस प्रकार व्यक्ति पुराना वस्त्र उतारकर नया वस्त्र धारण कर लेता है, उसी प्रकार आत्मा भी पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है।

आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते हैं न अग्नि जला सकती है न वायु उड़ा सकती है और न जल ही गीला कर सकता है। आत्मा को जो मारता है और जो इसे मरा हुआ समझाता है। वह दोनों यह नहीं जानते कि न यह मरती है और न ही मारी जाती है। हे अर्जुन! युद्ध में विजयी हुए तो श्री और युद्ध न करने पर अपयष मिलेगा इसलिए युद्ध कर।

गीतानुसार हमें साधारण जीवन के व्यवहार से घृणा नहीं करनी चाहिए अपितु स्वार्थमय इच्छाओं का दमन करना चाहिए। अहंकार को नष्ट करना चाहिए। अहंकार के रहते हुए ज्ञान का उदय नहीं होता। गुरू की कृपा नहीं होती और ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता नहीं होनी चाहिए।

गीता में भगवान का कथन है कि मुझे जिस रूप में माना जाता है। उसी रूप में मैं व्यक्ति को दर्षन देता हूॅ। चाहे शैव हो या वैष्णव या कोई और! गीता के उपदेषों को सभी ने स्वीकृत किया है। अतः यह किसी सम्प्रदाय विषेष का ग्रन्थ नहीं है। उत्कृष्ट भावना का परिचायक होने के कारण गीता का हिन्दू धर्म ग्रन्थों में सर्वोपरि स्थान प्राप्त है।

भारत और विदेषों में भी गीता का बहुत प्रचार है। संसार की शायद ही ऐसी कोई सभ्य भाषा हो जिसमें गीता का अनुवाद न हो। पाष्चात्य विद्वान हम्बोल्ट ने गीता से प्रभावित होकर कहा है कि, 'किसी ज्ञात भाषा में उपलब्ध गीतों में सम्भवतः सबसे अधिक सुन्दर और दार्षनिक गीता है। **गीता– गज्त्र त्रैंष्त्र जगत की परम निधि है।**

आज का युग परमाणु युद्ध की विभीषिका से भयभीत हैं। ऐसे में गीता का उपदेष ही हमारा मार्गदर्षन कर सकता है। आज का मनुष्य प्रगतिषील होने पर भी किंकर्तव्य–विमूढ़ है। अतः वह गीता से मार्ग दर्षन प्राप्त कर अपने जीवन को सुखमय और आनन्दमय बना सकता है।

गीता में सम्पूर्ण वेदों का सार निहित है। गीता की महत्ता को शब्दों में वर्णन करना असम्भव है। यह स्वयं भगवान कृष्ण के मुखारविन्द से निकली है। स्वयं भगवान कृष्ण इसका महत्व बताते हुए कहते हैं कि, 'जो पुरूष प्रेमपूर्वक निष्काम भाव से भक्तों को पढ़ाएगा अर्थात् उनमें इसका प्रचार करेगा वह निष्चय ही मुझको (परमात्मा) प्राप्त होगा। जो पुरूष स्वयं इस जीवन में गीता शास्त्र को पढ़ेगा अथवा सुनेगा वह सब प्रकार के पापों से मुक्त हो जायेगा। गीता सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धार के लिए है। कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति किसी भी वर्णन आश्रम या देष में स्थित हो। वह श्रद्धा भक्तिपूर्वक गीता का पाठ करने पर परम सिद्धि को प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष -

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि सत्य, ज्ञान, अनन्त, निगुर्ण, निर्विषेष परब्रह्म के साधर्म्य से अत्यन्ताभेदावस्था को प्राप्त होकर, परम पावन ज्ञान का आश्रय लेकर अर्थात् त्रिगुणातीत अवस्था को प्राप्त कर महात्मा शोक–मोह से मुक्त हो जाते हैं एवं महासृष्टि–ब्रह्मा के उत्पत्तिकाल में भी उत्पन्न नहीं होते तथा महाप्रलय– ब्रह्मा के विनाषकाल में भी व्यथित नहीं होते हैं। इस प्रकार सब मननषील मुनिजन इस त्रिगुणात्मक संसार के जन्म–मृत्यु से मुक्त होकर मोक्षरूप परम सिद्धि को प्राप्त हुए।

गुणों का त्रित्व–

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि प्रकृति से सत्व, रज एवं तम ये तीन गुण उत्पन्न हुए हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को गुणों का प्रभाव बताते हुए कहते हैं कि सत्व, रज और तम ये त्रिगुण प्रकृति से उत्पन्न होकर इस देह में देहधारी शरीरी निर्विकार, गुणातीत आत्मा को अपने विकारों से आच्छादित करके देहाध्यास के द्वारा बॉधते हैं अर्थात् देह के सुख–दुःख से सुखी और दुःखी होते हैं।

इन गुणों में सत्वगुण लघु, प्रकाषक और इष्ट आनन्दस्वरूप होता है। इसी से ज्ञान विषयों को प्रकाषित करता है और इन्द्रियॉ विषयों को ग्रहण करती हैं। इसी के कारण मन, बुद्धि और तेज में प्रकाष तथा दपर्ण में प्रतिबिम्ब शक्ति है। लघुता अथवा हल्कापन, ऊर्ध्व अथवा ऊपर की दिषा में गमन आदि सब तत्व गुण के कारण है। हर्ष, सन्तोष, तृप्ति, उल्लास आदि सभी प्रकार के आनन्द वस्तुओं और मन में उपस्थित सत्व गुण के कारण होते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के कथनानुसार शम, दम, तितिक्ष, विवेक, तप, सत्य, दया, स्मृति, सन्तोष, त्याग, अस्पृहा, श्रद्धा, लज्जा, आत्मप्रीति और दान आदि ये सब सत्वगुण की वृत्तियॉ हैं।

इसी प्रकार **श्रीमद्भगवद्गीता** में भी सत्वगुण का लक्षण बताते हुए कहा गया है कि यह गुण निर्मल होने के कारण आत्मतत्व का प्रकाषक तथा अनामय, निरपद्रव एवं शान्त हैं। अतः शान्त होने के कारण अपने कार्य सुख के संग बॉधता है तथा स्वच्छ और प्रकाषक होने के कारण अपने कार्य, धर्म और ज्ञान के द्वारा बॉधता है। इसी सन्दर्भ में अन्यत्र कहा गया है कि जब इस भोगायतन शरीर के श्रोत्रादि द्वारा इन्द्रियों में प्रकाष–ज्ञान उत्पन्न हो अर्थात् जब चित्त प्रसन्न, शुद्ध, विषयों के सम्पर्क में रहित हो, इन्द्रियॉ शान्त हो, देह निर्भय हो तथा मन वैराग्ययुक्त रागरहित हो, उस समय सत्वगुण की वृद्धि समझनी चाहिए, जो परमात्मा की प्राप्ति का साधन है।

सन्दर्भ सूची

1. अष्टावक्र गीता टीकाकार–राय बहादुर बाबू जालिम सिंह, प्रकाषक–तेजकुमारबुकडिपो (प्रा0) लि0 लखनऊ, बारहवॉ संस्करण–सन् 2000 ई0
2. अष्टावक्र गीता व्याख्याकार–नन्द लाल दषोरा, प्रकाषक–रणवीर प्रकाषन, हरिद्वार। बारहवॉसंस्करण–सन् 2002 इ ं0
3. अष्टावक्र गीता अनुवादक–स्वामी हरिहरदास त्यागी, प्रकाषक–रणवीर प्रकाषन, हरिद्वार। प्रथमसंस्करण–सन् 2001 ई0
4. अष्टावक्रमहा गीता व्याख्याकार–काका हरिओउम्, प्रकाषक–मनोज प्रकाषन, दिल्ली। संस्करण–सन् 2004 ई0
5. अष्टावक्रमहा गीता व्याख्याकार–ओषो, प्रकाषक–ताओ प्रकाषन प्रा0 लि0 पुणे।

6. अष्टावक्रमहा गीता व्याख्याकार–आचार्य मानिक, प्रकाषक–साधना प्रकाषन, दिल्ली। संस्करण–सन् 2004 ई0

स्मृतिसाहित्य–

1. श्रीमद्भगवद् गीता प्रकाषक–गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद् गीता टीकाकार–जयदयाल गोयन्दका।
3. तत्वविवेचनी हिन्दी– टीकाप्रकाषक–गीता प्रेस, गोरखपुर, उन्नीसवॉस ंस्करण– सं0 2049।
4. षिवगीता टीकाकार– पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र, प्रकाषक– खेमराज श्रीकृष्ण दास, बम्बई संस्करण–सन् 2002 ई0 पप

अद्वैत दर्षन साहित्य–

1. अप्पय दीक्षित सिद्धान्तलेष संग्रह अनुवादक–वेदान्ताचार्य प ं0 श्रीमूलष ंकरव्यास, प्रकाषक–भारतीय बुककारपोरेषन, दिल्ली संस्करण–सन् 2005 ई0

2. चित्सुखाचार्य तत्वप्रदीपिका (चित्सुखी) प्रकाषक–उदासीन संस्कृत विद्यालय, वाराणसी तृतीय संस्करण–सन् 1985 ई0

3. दत्तात्रेय अवधूत गीता अनुवादक और व्याख्याकार–नन्दलालदषोरा, प्रकाषक–रणवीर प्रकाषन, हरिद्वार। बारहवॉ ंसंस्करण–सन् 2002 इ ं0

4. दत्तात्रेय जीवनमुक्त गीता टीकाकार–ब्रजरत्न भट्टाचार्य, प्रकाषक–खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई। संस्करण–सन् 1999 ई0

5. नृसिहाश्रम वेदान्त तत्व विवेक अनुवादक–स्वयं प्रकाषगिरि, प्रकाषक – श्री दक्षिणा मूर्ति मठ प्रकाषन, वाराणसी प्रथम संस्करण–सन् 1997 ई0

6. पद्मपादाचार्य पंच पादिका टीकाकार एवं सम्पादक – डा0 किषोर दास स्वाामी, प्रकाषक – स्वामी रामतीर्थ मिषन, देहरादून। संस्करण–सन् 2001 ई0

7. विद्यारण्य स्वामी जीवन मुक्ति विवेक टीकाकार–ठाकुर उदयनारायण सिंह, प्रकाषक–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी द्वितीय संस्करण– सनं0 2041

सामान्य ग्रन्थ–

1. आधुनिक भारतीय चिन्तन विष्वनाथ, नरवणे अनु0 नेमि चन्द्र जैन, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली–1966।
2. गीता दपर्ण स्वामी रामसुख दास गीता प्रेस, गोरखपुर, 1991।
3. गीतातत्वांक स्वामी रामसुख दास गीता प्रेस, गोरखपुर, 1948।
4. गीता उपदेष जगदीष चन्द्र विद्यार्थी आर्य कुमार सभा, दिल्ली, 1995।
5. गीता का कर्म योग विष्वबन्धु वी0वी0आर0आई0 होषियारपुर, 1970।
6. गीता का योग रामसुख दास गीता प्रेस, गोरखपुर, 1985।
7. गीता का प्रेरक तत्व काका साहबे कालेत्रकर भारतीय विद्याभवन, बम्बई, 1967।

8. गीता धर्म गीता धर्मकार्यालय, काषी, 1938।
9. गीता का व्यवहार राम गोपाल मेहता किताब महल, इलाहाबाद।
10. चौबीस गीता पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य संस्कृत संस्थान, ख्वाजा, कुतुबरोड़, बरेली, 1971।
11. भारतीय दर्षन डा0 राधा कृष्णन नन्दकिषोर राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1966।
12. भारतीय दार्षनिक समस्यायें नन्दकिषोर शर्मा राजस्थान साहित्य संस्थान, जयपुर।
13. वेदान्त दर्षनवादरायण व्याख्या गोविन्दानन्द, वेंकटेष्वर मुद्रणालय, बम्बई, 1994।
14. वेदान्त दर्ष्न डायसनपाल हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1971।
15. श्रीमद्भगवद् गीता घनष्याम दास जालन गोविन्द भवन कार्यालय, गीताप्रेस, इलाहाबाद।
16. श्रीमद्गणेष गीता नीलकन्ठ आनन्द आश्रम, पूना।
17. श्रीमद्भगवद् दर्षन वाई0बी0कल्हकर पूना विद्यापीठ, पूना।
18. योग दर्षन डा0 सम्पूर्णानन्द हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ।